कथा सरिता

यदि मैं ना होता तो!

हनुमानजी ने प्रभु श्रीराम से कहा था - प्रभो, यदि मैं लंका न जाता, तो मेरे जीवन में बड़ी कमी रह जाती। सबसे पहले तो विभीषण का घर जब तक मैंने नहीं देखा था, तब तक मुझे लगता था, कि लंका में भला सन्त कहाँ मिलेंगे!

'लंका निसिचर निकर निवासा, इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा...'

प्रभो, मैं तो समझता था कि सन्त तो बस यहीं होते हैं, लेकिन जब मैं लंका में सीताजी को ढूंढ़ नहीं सका और विभीषण से भेंट होने पर उन्होंने उपाय बता दिया, तो मैंने सोचा कि अरे, जिन्हें मैं प्रयत्न करके नहीं ढूँढ़ सका, उन्हें तो इन लंका वाले सन्त ने ही बता दिया। शायद प्रभु ने यही दिखाने के लिए भेजा था कि इस दृश्य को भी देख लो।

और दूसरा प्रभु, अशोक वाटिका में जिस समय रावण आया और रावण क्रोध में भरकर तलवार लेकर सीता माँ को मारने के लिए दौड़ा, तब मुझे लगा कि अब मुझे कूदकर इसकी तलवार छीन कर इसका ही सिर काट लेना चाहिए, किन्तु अगले ही क्षण मैंने देखा कि मन्दोदरी ने रावण का हाथ पकड़ लिया। यह देखकर मैं गद्गद् हो गया।

अहो प्रभु! आपने कैसी शिक्षा दी! यदि मैं कूद पड़ता, तो मुझे भ्रम हो जाता कि यदि मैं न होता तो क्या होता? अधिकतर व्यक्तियों को ऐसा ही भ्रम हो जाता है। मुझे भी लगता कि, यदि मैं न होता, तो सीताजी को कौन बचाता? पर आप कितने बड़े कौतुकी हैं? आपने उन्हें बचाया ही नहीं, बल्कि बचाने का काम रावण की उस पत्नी को ही सौंप दिया, जिसको प्रसन्नता होनी चाहिए थी कि सीता मरे, तो मेरा भय दूर हो। तो मैं समझ गया कि आप जिससे जो कार्य लेना चाहते हैं, वह उसी से लेते हैं। किसी का कोई महत्व नहीं है। तीसरे, आगे चलकर जब त्रिजटा ने कहा कि लंका में बन्दर आया हुआ है, तो मैं समझ गया कि यहाँ तो बड़े सन्त हैं। मैं आया और यहाँ के सन्त ने देख लिया। पर जब उसने कहा कि वह बन्दर लंका जलायेगा, तो मैं बड़ी चिन्ता में पड़ गया कि प्रभु ने तो लंका जलाने के लिए कहा नहीं और त्रिजटा कह रही है, तो मैं क्या करूँ? पर प्रभु, बाद में तो मुझे सब अनुभव हो गया।

रावण की सभा में मैं इसलिए बँधकर रह गया कि सब करके तो मैंने देख लिया, अब ज़रा बँधके देखूं कि क्या होता है! जब रावण के सैनिक तलवार लेकर मुझे मारने के लिए चले तो मैंने अपने को बचाने की तनिक भी चेष्टा नहीं की, पर जब विभीषण ने आकर कहा - दूत को मारना अनीति है, तो मैं समझ गया कि देखो, मुझे बचाना है, तो प्रभु ने यह उपाय कर दिया।

पहले विभीषण दिखाकर मन का भ्रम हटाया फिर सीताजी को बचाना है, तो रावण की पत्नी मन्दोदरी को लगा दिया। मुझे बचाना था, तो रावण के भाई को भेज दिया।

प्रभु, आश्चर्य की पराकाष्ठा तो तब हुई, जब रावण ने कहा कि बन्दर को मारा तो नहीं जायेगा, पर पूँछ में कपड़ा-तेल लपेट कर घी डालकर आग लगाई जाय, तो मैं गद्गद् हो गया कि उस लंका वाली सन्त त्रिजटा की ही बात सच थी। लंका को जलाने के लिए मैं कहाँ से घी, तेल, कपड़ा लाता, कहाँ आग ढूँढ़ता! वह प्रबन्ध भी आपने रावण से करा लिया। जब आप रावण से भी अपना काम करा लेते हैं, तो मुझसे करा लेने में आश्चर्य की क्या बात है! इसलिए यह याद रखें, कि संसार में जो कुछ भी हो रहा है, वह सब कर्म विधान है। हम आप सब तो केवल निमित्त मात्र हैं।

बाढ़-बिहार। जगन्नाथन हाई स्कूल बाढ़ में आध्यात्मिक ज्ञान देने के पश्चात् चित्र में विद्यार्थियों तथा स्कूल स्टाफ के साथ ब्र.कु. ज्योति तथा अन्य।

अपेक्षा ही दु:ख का कारण

किसी दिन एक मटका और गुलदस्ता साथ में खरीदा हो और घर में लाते ही 50 रूपये का मटका अगर फूट जाए तो हमें इस बात का दु:ख होता है, क्योंकि मटका इतनी जल्दी फूट जायेगा ऐसी हमें कल्पना भी नहीं थी, पर गुलदस्ते के फूल जो 200 रूपये के हैं वो शाम तक मुरझा जाए तो भी हम दु:खी नहीं होते, क्योंकि ऐसा होने वाला ही है यह हमें पता ही था।

मटके के इतनी जल्दी फूटने की हमें अपेक्षा ही नहीं थी तो फूटने पर दु:ख का कारण बना, पर फूलों से अपेक्षा नहीं थी इसलिये वे दु:ख का कारण नहीं बने, इसका मतलब साफ़ है कि जिसके लिए जितनी अपेक्षा ज़्यादा, उसकी तरफ से उतना दु:ख ज़्यादा और जिसके लिए जितनी अपेक्षा कम, उसके लिए उतना ही दुख भी कम। इसलिए ख़ुश रहें..स्वस्थ रहें..मस्त रहें..।

सर्वोपरि कर्त्तव्य

एक राजा पंडितों, विद्वानों से प्राय: प्रश्न किया करते थे कि संसार में सबसे बड़ा कर्त्तव्य क्या है? इस प्रश्न के उत्तर में विद्वानों ने उन्हें विभिन्न उत्तर दिए, पर किसी के भी उत्तर से राजा संतुष्ट नहीं हो पाए। एक दिन वे शिकार खेलने जंगल में गए। एक जानवर का पीछा करते-करते वे रास्ता भटक गए। भीषण गर्मी के कारण उन्हें चक्कर आने लगा। खोज करने पर उन्हें एक आश्रम दिखाई पड़ा, जहाँ एक संत ध्यानस्थ थे। राजा उन्हें पुकारते हुए बेहोश हो गए।

होश में आने पर उन्होंने देखा कि संत उनके मुख पर पानी के छींटे मार रहे हैं। राजा ने विनम्रता से कहा, 'महात्मन! आप तो समाधि में लीन थे। आपने मेरे लिए समाधि क्यों भंग की?' संत ने राजा से कहा - 'राजन! आपके प्राण संकट में थे। ऐसे समय में मेरे लिए ध्यान की अपेक्षा आपकी सहायता के लिए तत्पर होना ज़्यादा महत्वपूर्ण कार्य था। समय और परिस्थिति को देखते हुए ही कत्तर्व्य का निर्धारण करना चाहिए।'

उनके इस कथन से राजा की जिज्ञासा भी शांत हो गई कि सर्वोपरि कर्त्तव्य क्या है। उन्होंने समझ लिया कि सबसे बड़े कर्त्तव्य का निर्णय परिस्थिति को देखकर ही किया जा सकता है।

सबसे मूल्यवान निधि

विष्णु जी के वैकुंठ धाम में भीड़ लगी हुई थी। प्रभु ने संकल्प किया था कि वे अपने धाम से किसी को खाली हाथ नहीं जाने देंगे। सभी प्राणी उनसे भाँति-भाँति की संपदा मांगने में लगे थे। वैकुंठ का कोश रिक्त होते देख महालक्ष्मी ने विष्णु जी से पूछा - ''हे प्रभु! आप यह सारी संपदा मुक्त भाव से लुटा देंगे तो वैकुंठ में क्या बचेगा? यहाँ के निवासी कहाँ जाएंगे, क्या करेंगे?''

लक्ष्मी जी की बात सुनकर विष्णु जी मुस्कराते हुए बोले– ''देवी! आप चिंता न करें। सब कुछ लुटाने पर भी एक निधि ऐसी है, जो मेरे पास सदा सुरक्षित रहती है। उसे यहाँ उपस्थित नर, किन्नर, गंधर्व, विद्याधर, देव एवं असुरों में से किसी ने नहीं मांगा है। वह निधि 'मन की शांति' है। ये प्राणी यह नहीं जानते कि मन की शांति के बिना समस्त धन-संपदा और त्रिलोक का वैभव-विलास किसी मूल्य का नहीं। बिना शांति प्राप्त किए वह सारी संपदा व्यर्थ सिद्ध होती है।'' विष्णु जी का उत्तर सुन महालक्ष्मी मुस्कुराईं और कहा सच में मन की शांति सबसे मूल्यवान निधि है।

दिल्ली-हरिनगर। ज्ञानचर्चा के पश्चात् चित्र में पूर्व यू.जी.सी. चेयरमैन वेद प्रकाश, इंडियन पार्लियामेंट कन्सलटेंट बहन शिमला, ब्र.कु. शुक्ला दीदी, ब्र.कु. नेहा तथा ब्र.कु. चौधरी भाई।

हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। कमिश्नर सुभाष चन्द्र शर्मा को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका तथा प्रसाद देते हुए ब्र.कु. शान्ता।

बहादुरगढ़-हरियाणा। एच.पी. गैस प्लांट,असौधा,बहादुरगढ़ में 'तनाव मुक्ति सेमिनार' कराने के पश्चात् समूह चित्र में राजयोगिनी ब्र.कु. दीपा, ब्र.कु. संदीप, सीनियर मैनेजर पानीग्रही जी, स्टाफ तथा कर्मचारीगण।

जोधपुर-राज.। 'बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मयूराक्षी कॉलेज के प्रिन्सीपल वी.एस. पालरिया, डॉ. सुरेखा, प्रो. विजया शर्मा, ब्र.कु. फूल, ब्र.कु. शील, ब्र.कु. मंजू तथा ब्र.कु. मीनू।

सुनाम-पंजाब। 'खुशिया आपके द्वार' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए राजेन्द्र बत्रा,ए.डी.सी. संगरूर, विलियम जेजी,डी.एस.पी., सोमनाथ वर्मा,प्रेसीडेंट,पंजाबी सभा, राजेन्दर गोयल,प्रेसीडेंट,भारत विकास परिषद, ब्र.क. ओंकार, ब्र.कु. मीरा तथा अन्य।

दिल्ली-लाजपत नगर। कस्तुरबा निकेतन चाइल्ड होम केयर में सात दिवसीय 'बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' कराने के पश्चात् बच्चों के साथ ब्र.कु. जया, होम केयर की इंचार्ज बहन आशा तथा प्रो. राजीव।